मैडम ने जिगोलो बनने का रास्ता दिखाया-1

“एक कम्पनी में मेरी जॉब लगी और वहां एक मैडम से मेरी मित्रता हो गयी. हम खूब बातें करने लगे. हमारी यह दोस्ती किस मंजिल तक पहुंची, पढ़ें मेरी सेक्स कहानी और मजा लें ! …”

Story By: (sanjyot)
Posted: Thursday, June 27th, 2019
Categories: ऑफिस सेक्स
Online version: मैडम ने जिगोलो बनने का रास्ता दिखाया-1

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

मैडम ने जिगोलो बनने का रास्ता दिखाया-1

 यह कहानी सुनें
नमस्कार पाठको … मेरा आप सबको प्रणाम, मैं अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ. मैं फ्री टाईम में हमेशा अन्तर्वासना पे कहानी पढ़ता रहता हूँ. पॉर्न कहानी पढ़ना पॉर्न क्लिप देखने से भी ज्यादा मजेदार होता है. मैं आपको मेरी एक कहानी बताने जा रहा हूं. यह एक अनचाही घटना है. जिसकी वजह से मेरी जिंदगी बदल गई.

सेक्स कहानी बताने से पहले मैं आपको मेरे बारे में जानकारी देना चाहता हूं. मैं एक मैकेनिकल इंजीनियर हूं … दिखने में सांवला हूं और भरे हुए कद का हूं.

मेरे लंड की लंबाई साढ़े पांच है. मैं एक नॉर्मल लड़के जैसा हूं. मुंबई के बाहरी शहर डोंबिवली में रहने वाला हूं. सन 2016 में इंजीनियरिंग खत्म करने के बाद मुझे अगस्त 2017 को अंबरनाथ MIDC में स्थित एक कंपनी में नौकरी मिली.

मैं कंपनी के लोगों के साथ जल्द ही कनेक्ट हो गया. हर दिन कुछ नया सीखने को मिलने लगा. अब कंपनी भी मुझे एक परिवार की तरह लगने लगी थी. इधर साथ में काम करने वालों के साथ हंसी मजाक सब कुछ चलता था.

ये हंसी मजाक के साथ आदमी अपने जीवन के दु:ख छुपा देता है. यह बात मुझे तब समझ में आ गई, जब मेरी मुलाकात मेरे साथ कंपनी में काम करने वाली एक मैडम से हो गई.

मैडम का श्वेता (बदला हुआ नाम) था. वो करीब 35 साल की एक शादीशुदा औरत थीं. उनका रंग सांवले से थोड़ा गोरा था … भरा हुआ बदन था. मैडम हमेशा सलवार कमीज़ में कंपनी में आती थीं. कभी खास मौके पर ही साड़ी में आती थीं. जिस दिन मैडम साड़ी में

आती थीं, उस दिन तो उन्हें देखने वाले का बुरा हाल हो जाता था.

खैर हर रोज की तरह, दिन अच्छे जा रहे थे. सबके साथ पहचान बढ़ती गई. बातों ही बातों में पता चला कि श्वेता मैडम कल्याण में रहती हैं और मैं रोज उनके घर के रास्ते से होकर गुजरता हूं.

मैंने उन्हें बाइक पे साथ में चलने को कहा. मेरे विचारों में कोई गलत ख्यालात नहीं थे. औरत हमेशा आदमी के विचारों को जानकर उसके बारे में भांप लेती है.

कुछ देर बाद श्वेता ने साथ चलने में सहमति दे दी. उस दिन से हम कंपनी में साथ में आने जाने लगे.

घर से कम्पनी तक के इस 15 मिनट के सफ़र में हमारी रोज़ तमाम किस्म की बातें होती थीं.

अब हम एक दूसरे को कुछ ज्यादा ही जानने लगे थे. पर मैंने महसूस किया कि जब भी मैं कभी उनके पति के बारे में पूछने लगता, तो श्वेता मैडम बात बदल देती थीं. मुझे समझ आने लगा था कि शायद ये अपने पति को लेकर मुझसे बात करना नहीं चाहती हैं.

मैंने भी पूछना बंद कर दिया.

ऐसे ही दिन कटने लगे थे.

मेरा जन्मदिन के मौके पर कंपनी के लोगों ने केक कटवाया. पर उस दिन मैं ज्यादा खुश नहीं था. उसका कारण था कि मेरे घर में पैसों की दशा खराब थी. मैं उसी सोच में था.

घर लौटते समय श्वेता मैडम ने मेरा मूड भांप लिया था. उन्होंने मुझे खुश करने के लिए मुझे बाइक को एक रेस्तरां कम बार में रुकने बोल दिया. उन्होंने मुझे अपनी तरफ से पार्टी की ऑफर की. ऑफिस में सबको पता था कि मैं ड्रिंक लेता हूं. सबने मुझे कंपनी के पिकनिक

में ड्रिंक करते हुए देखा था.

श्वेता ने दो स्ट्रॉन्ग बियर आर्डर किया … तो मैंने पूछ लिया कि अब दो एक साथ क्यों आर्डर किए, एक बाद में ऑर्डर दे देते.
उन्होंने जवाब में कहा- क्या अकेले जन्मदिन मनाओगे ?

मैंने उनकी तरफ प्रश्न वाचक मुद्रा में देखा, तो उन्होंने कहा- कभी कभार मैं भी ड्रिंक कर लेती हूँ, पर सबके सामने नहीं.

बातों-बातों में ड्रिंक्स आ गई. हम दोनों ने चीयर्स किया और ड्रिंक्स का आनन्द लेने लगे. दो स्ट्रॉन्ग बियर और एसी की ठंडक की वजह से थोड़ा शुरूर चढ़ने लगा.

अब तक मेरी चार बीयर हो चुकी थीं. श्वेता मैडम ने दो बियर में ओके कर दिया. मेरा खुद पर से कंट्रोल निकलता जा रहा था.

श्वेता मैडम ने मुझसे पूछ लिया कि संज्योत (बदला हुआ नाम) क्या हो गया है तुम्हें ? आज तुम्हारा बर्थडे हो कर भी तुम आज शांत हो और ज्यादा खुश भी नहीं दिख रहे हो ?

मैं कुछ भी नहीं बोला, बस चुपचाप ड्रिंक लेता रहा. मैं उनको बताता भी क्या कि मेरे घर की हालत क्या है. हालांकि चार बियर गटकने के बाद भी मुझे होश तो था. तब भी मैं भी पीना रोकना मानने वाला नहीं था.

अब तक खाने का आर्डर भी आ गया. हम खाना खाने लगे.

श्वेता मैडम ने मेरी चुप्पी तोड़ते हुए कहा- अगर तुम मुझे कुछ बताना नहीं चाहते हो, तो ठीक है. इसका मतलब तुम मुझे अच्छे दोस्त नहीं मानते और भरोसा भी नहीं करते हो.
उन्होंने मेरा मुँह खोलने के लिए सीधा इमोशन ब्लैकमेल किया.

आखिरकार नशे की वजह से मैंने मुँह खोल ही दिया- क्या बताऊं तुम्हें कि मेरी हालत क्या है ? मैं किसी को नहीं बता सकता. इस हंसते चेहरे के पीछे बहुत सारे प्रॉब्लम छुपे रहते हैं … और मैं क्यों तुमको कुछ बताऊं … जब आप मेरे एक सवाल हमेशा टाल देती हो. हां एक शर्त पर बता सकता हूं, अगर आपको मंजूर है तो ?
श्वेता- कौन सी शर्त ?
मैं- आपको भी आपके पति के बारे में बताना होगा ?
श्वेता- ठीक है … पर तुम्हें पहले बताना होगा.
मैं- अगर बाद में पलट गईं तो ?
श्वेता- मैं कसम लेती हूं, सब बता दूंगी.

मैं- ठीक है … सुनो, मेरे पापा एक नेक इंसान हैं. हमेशा किसी को भी मदद करते हैं. वे ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं, पर घर की परवरिश अच्छी तरह से कर रहे हैं. उनकी मेहनत से घर में पैसों की कमी नहीं थी. पर कहते हैं ना कि कुछ लोग अपना स्वार्थ ही देखते हैं. जो भी मेरे घर परेशानी लेकर आता था, उसको पापा मदद करते थे. उन्होंने कभी ब्याज भी नहीं लिया और लेने वाले से पैसा वापस करने को भी कभी नहीं कहा. बस यही कहा कि जब तुम्हारी परिस्थिति संभल जाए, तब वापस कर देना. पर लोगों ने कभी वापस दिया ही नहीं. अब सब मेरे पापा को पीठ दिखा कर चले जाते हैं. धीरे धीरे हमारी कंडीशन खराब होती गई और हम कर्जदाता से कर्जदार बन गए. कभी किसी से ब्याज तो लिया नहीं, पर आज ब्याज चुका रहे हैं. मुझे मेरी आय के साधन बढ़ाने हैं ताकि मैं घर को संभाल सकूं.

श्वेता मैडम एकदम शांत हो कर सब सुन रही थीं. अंत में मुझसे बोलीं- देख … हर एक की अपनी एक कहानी है. कोई किसी को बताता नहीं है, जब तक कोई भरोसा नहीं कर सके. धन्यवाद तुमने मुझ पर भरोसा किया.

अब तक हम दोनों ने खाना खा लिया था और हाथ धोने लगे थे. उतने में श्वेता मैडम ने

बिल मंगवाया.
मैंने तुरंत उन्हें याद दिलाया कि अभी तुम्हारी कहानी बाकी है.
उन्होंने जवाब में कहा- हां पता है … और मुझ पर भरोसा करो, समय आने पर सब बता दूंगी.

हम दोनों बार से बाहर निकल रहे थे, पर नशे के कारण मेरी चाल बिगड़ गई थी. श्वेता मैडम मुझे संभालते हुए बाहर लेकर आईं.

मैंने श्वेता मैडम से कहा- सुनिए … एक प्रॉब्लम है.
श्वेता- अब क्या ?
मैं- इस हालत में मैं बाइक चला नहीं सकता और घर पे नहीं जा सकता. घर वालों को पता नहीं कि मैं ड्रिंक करता हूं. आप एक काम करो, मेरे लिए एक होटल में कमरा बुक करा दो और आप ऑटो पकड़ कर घर चली जाओ. मेरे मोबाइल से घर पर मैसेज भेज दो कि आज एक्स्ट्रा काम की वजह से ओवर नाइट कंपनी चालू है, मैं कल शाम को घर आऊंगा.

श्वेता- इस हालत में अब तू मुझे सिखाएगा कि मुझे क्या करना है और क्या नहीं ? और मैं तुझे इस हालत में कैसे छोड़ सकती हूं, ये तूने सोच भी कैसे लिया … चल मेरे साथ.
मैं- कहां ?
श्वेता- मेरे घर … और कहां.
मैं- पर आपके पति क्या कहेंगे ?
श्वेता- वो सब मैं देख लेती हूं, अब तू मुँह बंद कर और ऑटो में बैठ.

ऑटो में बैठते समय उसने बार के सुरक्षा कर्मी को बोल दिया कि भैया बाइक इधर रहने दो, कल सुबह लेकर जाएंगे.
उसने जवाब में हामी भर दी.

अब हम ऑटो से सीधा उनकी बिल्डिंग के पास उतर गए. वह एक सामान्य सी चार मंजिला बिल्डिंग थी. पहले मंज़िल पे श्वेता मैडम का घर था. उसके बगल में तीन और फ्लैट थे, पर उनके दरवाजे बंद थे. इसीलिए वहां पर हमें देखने वाला कोई नहीं था. श्वेता मैडम जब दरवाजे का ताला खोल रही थीं, तब मेरी नजर दरवाजे के सामने बनाई गई रंगोली पे जा पड़ी. ये एक सुंदर रंगोली थी.

मैंने श्वेता मैडम से पूछा- क्या ये आपने बनाई है ?
श्वेता- हां … मैं हर रोज सुबह जल्दी उठकर रंगोली बनाती हूं. यह रंगोली मेरे घर की शोभा बढ़ाती है. एक सकारात्मक ऊर्जा पैदा करती है.

खैर हम दोनों घर में दाखिल हो गए. रोशनी जलते ही सामने जो नजारा था, उसको मैं देखता ही रह गया. घर में दाखिल होते ही लाफिंग बुद्धा की मूर्ति स्वागत करती दिखी. सब दीवार सुंदर तरीके से पेंट किए गए थे. पेंट अलग अलग टेक्सचर के थे … सुंदर सीलिंग थी. उस सीलिंग को एलइडी लाइट की मध्यम रोशनी और भी सुंदर बना रही थी. एक बड़ी दीवार पर गणेश जी की बड़ी सी कलात्मक तस्वीर लगी थी. सामने बड़ा सा एलइडी टीवी … एक फिश टैंक. उसमें अलग अलग रंग की मछलियां. मॉर्डन टाईप का सोफ़ा कम बेड … एसी भी लगवाया हुआ था. खूब सजाया हुआ घर था.

श्वेता मैडम ने डोर बंद किया और मुझे बैठने का कह कर नहाने के लिए चली गईं. उन्होंने फ्रेश होने के बाद मैक्सी पहन ली थी. उसके बाद उन्होंने मुझे टॉवेल दिया और फ्रेश होने को कहा.
पर मेरे पास एक्स्ट्रा कपड़े नहीं थे, तो मैंने नहाने से मना किया.
श्वेता- कोई बात नहीं, तुम टॉवेल में रह लेना.

मेरे नहाने तक उन्होंने दो अलग अलग बेड सोने के लिए लगाए. अब उनके सामने सिर्फ टॉवेल में मैं असहज था.

एसी चालू हो गया था. मुझे रिलैक्स करने के लिए मैडम ने मुझसे बातें करना चालू कर दीं. पर मैं मेरे उसी प्रश्न पर अटका था.

मैंने उन्हें फिर से याद दिलाया- आपके पति कहां हैं ?और आपके बच्चे ?
श्वेता- आज मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूंगी. पर वादा करो कि तुम किसी को कुछ नहीं बताओगे.
मैं- प्रॉमिस.
श्वेता- मेरा पाच साल पहले डिवोर्स हो चुका है.

यह सुनते ही मेरा थोड़ा नशा उतर गया था. मेरे मुँह से सिर्फ 'क्या ?' निकला.

श्वेता- हां ये बात सच है. मैं 26 साल की थी, तब मेरी शादी हो गई थी. एक अच्छी बहू की तरह सबकी देखभाल करती थी. सुबह जल्दी उठकर भगवान की पूजा करके सब काम करती थी. सबका टिफिन बनाना, साफ सफाई करना, उसके बाद जॉब फिर घर पे आके सबका खाना बनाती थी. सास ससुर का भी ख्याल रखती थी.
पर नियति को ये सब मंजूर नहीं था. शादी के दो साल बाद भी बहुत प्रयास करने के बाद भी मैं प्रेगनेंट नहीं हो रही थी. मेरे पति भी मुझे सहयोग करते थे. उनका मुझ पर कोई दबाव नहीं था. वो मुझसे बहुत प्यार करते थे.
पर सास ससुर बच्चे के लिए दबाव बढ़ाने लगे. डॉक्टर को दिखाया तब पता चला कि मैं कभी मां नहीं बन सकती. उस समय मैं बहुत रोई थी. मां बनना हर एक औरत की चाहत होती है. मुझसे ये सुख भगवान ने छीन लिया था.
मेरे पति ने मुझे दिलासा दिया कि कोई बात नहीं. हम जी लेंगे जिंदगी … कोई बच्चा अडॉप्ट कर लेंगे. एक बेघर बच्चे को मां बाप और परिवार और घर भी मिल जाएगा. भलाई का काम करेंगे हम लोग. मुझे मेरे पति पे बहुत गर्व हो रहा था. इतनी अच्छी सोच रखते थे. हम घर आ गए और सास ससुर को सब रिपोर्ट के बारे में बताया.

उनको ये भी बताया कि हम बच्चा एडॉप्ट करने वाले हैं. पर उनके जेहन में ये बात सही नहीं लगी. उनको मंजूर नहीं था, उन्होंने साफ साफ मना कर दिया और साथ में ही मुझे ताने मारना चालू कर दिया. शुरुआत में मैंने ध्यान नहीं दिया, पर बात बढ़ती चली गई. अब पति भी मेरा साथ नहीं दे रहे थे, माँ बाप की बातों में आ गए थे. हमारी शादी को अब चार साल हो गए थे, तब अचानक मेरे पति ने मेरे सामने डिवोर्स के पेपर रख दिए. मेरे पैरों तले से जमीन खिसक गई, जिसका साथ था, अब वह भी साथ नहीं रहा था. फिर भी मैं पति से आशा लगाए बैठी थी कि उनका मन बदल जाएगा.
पर कुछ फर्क नहीं पड़ा, अंत में सब आशाएं छोड़कर मैंने डिवोर्स पेपर पे बिना कोई शर्त के साइन कर दिए. अब आगे मुझे अकेले सफर करना था, मैं अपना सामान और कुछ यादें लेकर एक किराए के मकान में रहने लगी.
दिन बीतते गए, अब सब कुछ सही होने लगा था. डिवोर्स के दो साल बाद मैंने यह फ्लैट लोन पे खरीदा है. मुझे अकेली औरत को काफी था. अकेली रहती हूं, तो मेरा खुद का खर्चा भी कम है. इसलिए मैंने मेरा घर सजाना चालू कर दिया.
मेरी ये बात मैंने किसी को भी बताई नहीं … क्योंकि अगर बता देती, तो सब मेरी तरफ अलग नजर से देखने लगते. रही बात मेरे पति की, तो वह अब उनके शादीशुदा जीवन में खुश हैं. कभी कभार मार्केट में नई पत्नी के साथ दिख जाते हैं. वो उसका भी मेरे जितना ही ख्याल रखते हैं. अब उनको एक 1½ साल की लड़की है.

मैं मैडम की बातें सन्न होकर सब सन रहा था, क्या रिएक्ट करूं, कुछ समझ ही नहीं आ रहा था. मेरे दिल में श्वेता मैडम के प्रति सम्मान और बढ़ गया था.

श्वेता मैडम के साथ मेरी ये जुगलबंदी ने मुझे क्या मंजिल थमा दी. इस सेक्स कहानी का अगला भाग आपको यही बताएगा. आपके कमेंट्स का इन्तजार रहेगा.
sanjyot.shinde20@gmail.com
कहानी जारी है.

Other stories you may be interested in

पचास साल का कड़क लंड

मैं आनंद मेहता पचास साल का हूँ। मैं यह चोदन कहानी आप प्रिय पाठकों के लिए लिख रहा हूँ। आशा है कि आप इसे पढ़कर मजे लेंगे। मैं एक किराये के घर में रहता हूँ। मेरे ऊपर वाले घर में […]
Full Story >>>

बॉस को घर बुला कर सेक्स का मजा

दोस्तो, मेरा नाम उज्ज्वला है, मैं महाराष्ट्र की मराठिन मुलगी हूँ, मेरी हिन्दी थोड़ी कमजोर है. इसलिए मुझसे कुछ गलत टाइप हो जाए, तो माफ़ कीजिएगा. मैं शादीशुदा हूँ. मेरी उम्र 32 साल की है. मेरा रंग सांवला है, ऊंची […]
Full Story >>>

मेरी माँ की कामवासना

मेरा नाम रंजन कुमार है. मैं 20 साल का हूँ. ये बात दो साल पुरानी है. मेरे घर में मेरी मॉम, पापा और मैं और हमारा नौकर राजनाथ रहते थे. मैंने अपने जन्म के कुछ साल बाद अपनी माँ को […]
Full Story >>>

मेरी सगी मॉम के साथ सेक्स

दोस्तो, मेरा नाम रोशन है, मैं 21 साल का हो गया हूँ. आज मैं अपने घर की सच्ची कहानी बताने जा रहा हूं. मेरे घर में मेरी मॉम मीना देवी, मेरी 23 साल की सुमन दीदी, छोटी बहन 19 साल […]
Full Story >>>

आंटी की चूत में बजाई घंटी

अन्तर्वासना के सभी दोस्तों को मेरा नमस्कार. मेरा नाम यश है और मैं राँची का रहने वाला हूँ और बी.ए के अंतिम वर्ष में पढ़ाई कर रहा हूँ. यह मेरी पहली कहानी है. अगर मुझसे कोई ग़लती हो जाए, तो […]
Full Story >>>